मधुबन ओम् शान्ति अंक 392 मार्च 2025

पत्र-पुष्प

"सत्यता को धारण कर परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनो"

(दादी जी – 20-02-2025)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, अपने ब्राह्मण जीवन की कल्चर द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - फरवरी मास में सभी ने शिवबाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए सेवाओं की खूब धूम मचाई। त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के पहले से ही सेवाओं की खूब धूम मचाई है, जिसके समाचार मिलते रहते हैं। सभी को शिवजयन्ती के पावन पर्व की मुबारक के साथ बेहद सेवाओं की बहुत-बहुत बधाई।

बाबा तो कहते बच्चे, आपको बहुत-बहुत सभ्यता के साथ सत्यता को सिद्ध करना है इसलिए आपके बोल में स्नेह भी हो, मधुरता और महानता भी हो। सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो। निर्भय होकर अथॉरिटी से बोलो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों, अथॉरिटी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। यही बाप की प्रत्यक्षता का साधन है क्योंकि आप बच्चे बहुत-बहुत रॉयल हो, आपका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सत्यता और सभ्यता दिखाई दे। हमारी शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। सत्यता की परख है संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता की अनुभूति होना। कोई-कोई कहते हैं मैं तो सदा सच बोलता हूँ लेकिन बोल वा कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को वह सच, सच नहीं लगता इसलिए सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। बापदादा को बच्चों की सच्ची दिल ही पसन्द आती है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है, वह क्लीन और क्लीयर रहते हैं। लेकिन कई बच्चों ने अज्ञान की शक्ति क्रोध को अच्छी तरह से अपना संस्कार बना लिया है, उस संस्कार को बीच-बीच में यूज़ भी करते फिर माफी भी लेते रहते। बाबा चाहते हैं मेरे बच्चे अब हर गुण को, हर ज्ञान की बात को संस्कार बनायें तो स्वत: सभ्यता आती जायेगी। जैसे बाप को ''गॉड इज़ ट्रुथ'' कहते हो ऐसे आप बच्चों का भी हर संकल्प, हर बोल सत्य हो तब कहेंगे सत्य वचन महाराज। तो बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसी सत्यता को धारण किया है ना!

अभी तो होली का पावन पर्व समीप आ रहा है, इसलिए हो ली, सो हो ली, अभी हम सब तो मीठे बाबा के हो लिये, तो बीती को बिन्दी लगाओ और सम्पूर्ण पावन बनकर सच्ची-सच्ची होली मनाओ। श्रेष्ठ संस्कार मिलन की होली मनाते, एक दो को अपने श्रेष्ठ संग का रंग लगाओ। ऐसे अनेक आध्यात्मिक रहस्यों से भरे हुए इस पावन पर्व की आप सबको बहुत-बहुत दिल से बधाई हो। बाकी मधुबन घर में तो बहुत अच्छी अव्यक्ति मिलन की रिमझिम चल रही है। देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे मधुबन घर में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। यहाँ का शुद्ध शक्तिशाली वायुमण्डल, ब्रह्मा बाप की तपस्या स्थली, उनकी चरित्र भूमि, कर्मभूमि सभी को विशेष अनुभूतियां करा देती है। डबल विदेशी भाई बहिनें भी फरवरी मास में पूरे वर्ष के लिए मधुबन में ही आकर सेवाओं की प्लैनिंग करते हैं।

अच्छा - आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सत्यता और सभ्यता रूपी कल्चर को अपनाओ

1) ब्राह्मण जीवन में फर्स्ट नम्बर की कल्चर है ''सत्यता और सभ्यता''। तो हर एक के चेहरे और चलन में यह ब्राह्मण कल्चर प्रत्यक्ष हो। हर ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये। कोई कैसा भी हो आप अपना यह कल्चर कभी नहीं छोड़ो तो सहज परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बन जायेंगे।

2) सत्यता की निशानी सभ्यता है। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ो, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्वक। अगर सभ्यता को छोड़कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्मान। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्मान होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा।

3) जोश में आकर यदि कोई सत्य को सिद्ध करता है तो जरूर उसमें कुछ न कुछ असत्यता समाई हुई है। कई बच्चों की भाषा हो गई है - मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100 परसेन्ट सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन, इसमें ही सफलता होती है।

4) जब भी कोई असत्य बात देखते हो, सुनते हो तो असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। कई कहते हैं यह पाप कर्म है ना, पाप कर्म देखा नहीं जाता लेकिन वायुमण्डल में असत्यता की बातें फैलाना, यह भी तो पाप है। लौकिक परिवार में भी अगर कोई ऐसी बात देखी वा सुनी जाती है तो उसे फैलाया नहीं जाता। कान में सुना और दिल में छिपाया। यदि कोई व्यर्थ बातों का फैलाव करता है तो यह छोटे-छोटे पाप उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं, इसलिए इस कर्मों की गहन गति को समझकर यथार्थ रूप में सत्यता की शक्ति धारण करो।

5) परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। सत्यता से ही प्रत्यक्षता होगी - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता, दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है - स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनो। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्तव्य की सिद्धि नहीं हो सकती।

6) आपके बोल में स्नेह भी हो, मधुरता और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो। निर्भय होकर अथॉरिटी से बोलो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो, जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथॉरिटी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। यही है बाप की प्रत्यक्षता का साधन।

7) आप ब्राह्मण बच्चे बहुत-बहुत रॉयल हो। आपका चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायें। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता, सत्यता स्वत: ही दिखाई देती है। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। तो यह राइट नहीं है।

8) जो निर्मान होता है वही नव-निर्माण कर सकता है। शुभ-भावना वा शुभ-कामना का बीज ही है निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। अब अपने जीवन में सभ्यता के संस्कार धारण करो। यदि न चाहते हुए भी कभी क्रोध या चिड़चिड़ापन आ जाए तो दिल से कहो ''मीठा बाबा'', तो एक्स्ट्रा मदद मिल जायेगी।

9) ज्ञान की कोई भी बात अथॉरिटी के साथ, सत्यता और सभ्यता से बोलो, संकोच से नहीं। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो। भाषण में शब्द कम हों लेकिन ऐसे शक्तिशाली हों जिसमें बाप का परिचय और स्नेह समाया हुआ हो, जो स्नेह रूपी चुम्बक आत्माओं को परमात्मा तरफ खींचे।

10) आजकल कोई कोई एक विशेष भाषा यूज़ करते हैं कि हमसे असत्य देखा नहीं जाता, असत्य सुना नहीं जाता, इसलिए असत्य को देख, झूठ को सुन करके अन्दर में जोश आ जाता है। लेकिन यदि वह असत्य है और आपको असत्य देखकर जोश आता है तो वह जोश भी असत्य है ना! असत्यता को खत्म करने के लिए स्वयं में सत्यता की शक्ति धारण करो।

11) अब स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो। मुख से सत्यता की अथॉरिटी स्वत: ही बाप की प्रत्यक्षता करेगी। अभी परमात्म बॉम्ब (सत्य ज्ञान) द्वारा धरनी को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है - सदा मुख पर वा संकल्प में निरन्तर माला के समान परमात्म स्मृति हो। सबके अन्दर एक ही धुन हो "मेरा बाबा"। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो, यही अजपाजाप हो। जब यह अजपाजाप हो जायेगा तब और सब बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी।

12) जैसे परमात्मा एक है यह सभी भिन्न-भिन्न धर्म वालों की मान्यता है। ऐसे यथार्थ सत्य ज्ञान एक ही बाप का है अथवा एक ही रास्ता है, यह आवाज जब बुलन्द हो तब आत्माओं का अनेक तिनकों के सहारे तरफ भटकना बन्द हो। अभी यही समझते हैं कि यह भी एक रास्ता है। अच्छा रास्ता है। लेकिन आखिर भी एक बाप का एक ही परिचय, एक ही रास्ता है। यह सत्यता के परिचय की वा सत्य ज्ञान के शक्ति की लहर फैलाओ तब प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे सर्व आत्मायें सहारा ले सकेंगी।

13) जो भी ज्ञान की गुह्य बातें हैं, उसको स्पष्ट करने की विधि आपके पास बहुत अच्छी है और स्पष्टीकरण है। एक एक प्वाइंट को लॉजिकल स्पष्ट कर सकते हो। अपनी अथॉरिटी वाले हो। कोई मनोमय वा कल्पना की बातें तो हैं नहीं। यथार्थ हैं। अनुभव है। अनुभव की अथॉर्टी, नॉलेज की अथॉरिटी, सत्यता की अथॉरिटी... कितनी अथॉरिटीज़ हैं! तो अथॉरिटी और स्नेह - दोनों को साथ-साथ कार्य में लगाओ।

14) सत्यता के शक्ति स्वरूप होकर, नशे से बोलो, नशे से देखो। हम आलमाइटी गवर्मेन्ट के अनुचर हैं, इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है न कि छिपाना है लेकिन सभ्यता के साथ। नशा रहे कि हम शिव की शक्तियां हैं। हिम्मते शक्तियां, मददे सर्वशक्तिवान।

15) आपका बोल और स्वरूप दोनों साथ-साथ हों – बोल स्पष्ट भी हों, उसमें स्नेह भी हो, नम्रता मधुरता और सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों, फिर आपके शब्द कड़े नहीं, मीठे लगेंगे।

16) सच्ची दिल वाले सत्यवादी बच्चे, सत्यता की महानता के कारण सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआओं की प्राप्ति के कारण समय प्रमाण दिमाग युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: करता है क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है।

17) सत्यता की परख है संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता की अनुभूति होना। कोई कहते हैं मैं तो सदा सच बोलता हूँ लेकिन बोल वा कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा इसलिए सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा।

18) सम्पूर्ण सत्यता भी पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। सिर्फ काम विकार अपवित्रता नहीं है, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम-निशान न हो तब परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बन सकेंगे।

19) आपकी आन्तरिक स्वच्छता, सत्यता उठने में, बैठने में, बोलने में, सेवा करने में लोगों को अनुभव हो तब परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बन सकेंगे, इसके लिए पवित्रता की शमा सदा जलती रहे। जरा भी हलचल में न आये, जितना पवित्रता की शमा अचल होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे।

20) अपवित्रता सिर्फ किसको दु:ख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है जो डगमग होगी लेकिन डूबेगी नहीं इसलिए सत्यता की हिम्मत से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनो।

21) सत्यता के शक्ति की निशानी है ''निर्भयता''। कहा जाता है 'सच तो बिठो नच' अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला

सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। यदि अपने संस्कार वा संकल्प कमजोर हैं तो वह कमजोरी ही मन की स्थिति को हलचल में लाती है इसलिए पहले अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को अविनाशी रूद्र यज्ञ में स्वाहा करो।

22) कभी भी सभ्यता को छोड़ करके सत्यता को सिद्ध नहीं करना। सभ्यता की निशानी है निर्मानता। यह निर्मानता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते। ज्ञान की शक्ति शान्ति और प्रेम है। अज्ञान की शक्ति क्रोध को बहुत अच्छी तरह से संस्कार बना लिया है और यूज़ भी करते रहते हो फिर माफी भी लेते रहते हो। ऐसे अब हर गुण को, हर ज्ञान की बात को संस्कार रूप में बनाओ तो सभ्यता आती जायेगी।

23) जैसे बाप को ''गाड इज़ ट्रुथ'' कहते हैं, सत्यता ही बाप को प्रिय है। सच्चे दिल पर साहेब राज़ी है। तो दिल तख्तनशीन सर्विसएबुल बच्चों के सम्बन्ध-सम्पर्क में, हर संकल्प और बोल में सच्चाई और सफाई दिखाई देगी। उनका हर संकल्प, हर वचन सत होगा।

24) जो प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सम्पन्न रॉयल आत्मायें हैं उन्हें सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनमें क्रोध विकार की इमप्युरिटी भी नहीं हो सकती। क्रोध का सूक्ष्म रूप ईर्ष्या, द्वेष, घृणा भी अगर अन्दर में है तो वह भी अग्नि है जो अन्दर ही अन्दर जलाती है। बाहर से लाल, पीला नहीं होता, लेकिन काला होता है। तो अब इस कालेपन को समाप्त कर सच्चे और साफ बनो।

25) सत्यता की परख है संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता की अनुभूति होना। कोई कहते हैं मैं तो सदा सच बोलता हूँ लेकिन बोल वा कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा इसलिए सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा।

26) बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई, इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गॉड इज ट्रुथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है, वह क्लीन और क्लीयर रहता है। तो सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है।

27) हिम्मते शक्तियां मदद दे सर्वशक्तिमान। शेरनियां कभी किससे डरती नहीं, निर्भय होती हैं। यह भी भय नहीं कि ना-मालूम क्या होगा! सत्यता के शक्ति स्वरूप होकर, नशे से बोलो, नशे से देखो। हम आलमाइटी गवर्मेन्ट के अनुचर हैं, इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है न कि छिपाना है लेकिन सत्यता के साथ बोल में मधुरता और सभ्यता आवश्यक है।

28) अब अपने भाषणों की रूपरेखा नई करो। विश्व शान्ति के भाषण तो बहुत कर लिए लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान वा शक्ति क्या है और इसका सोर्स कौन है! इस सत्यता को सभ्यतापूर्वक सिद्ध करो। सभी समझें कि यह भगवान का कार्य चल रहा है। मातायें बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं - समय प्रमाण यह भी धरनी बनानी पड़ी लेकिन जैसे फादर शोज़ सन है, ऐसे सन शोज़ फादर हो तब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा।

29) कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? कई चतुराई से कहते हैं कि हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है लेकिन जब साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं तो क्या साइलेन्स की पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो?

30) कोई-कोई समझते हैं शायद क्रोध कोई विकार नहीं है, यह शस्त्र है। लेकिन क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है क्योंकि क्रोध अनेक आत्माओं के संबंध, सम्पर्क में आने से प्रसिद्ध हो जाता है और क्रोध को देख करके बाप के नाम की बहुत ग्लानी होती है। कहने वाले यही कहते हैं, देख लिया ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को, इसलिए इसके अंशमात्र को भी समाप्त कर सभ्यता पूर्वक व्यवहार करो।

31) यह तो सब समझने लगे हैं कि यह ''कोई हैं'', लेकिन यही हैं और यह एक ही हैं, यह हलचल का हल अब चलाओ। अभी और भी हैं, यह भी हैं यहाँ तक पहुंचे हैं लेकिन यह एक ही हैं, अभी ऐसा तीर लगाओ। धरनी तो बन गई और बनती जायेगी। लेकिन जो फाउन्डेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है नया ज्ञान। नि:स्वार्थ प्यार है, रूहानी प्यार है यह तो अनुभव करते हैं लेकिन अभी प्यार के साथ-साथ ज्ञान की अथॉरिटी वाली आत्मायें हैं, सत्य ज्ञान की अथॉरिटी हैं, यह प्रत्यक्ष करो तब प्रत्यक्षता हो।

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"रोज़ ख़ुशी की गोली खाओ तो बीमारी भाग जायेगी"

(गुल्जार दादी जी 03-11-09)

ओम शान्ति। शिवबाबा ने हमें कहा ओम् शान्ति के इस मंत्र को यंत्र बना दो क्योंकि ओम् शान्ति का अर्थ है कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, तो ओम् शान्ति कहने से ही अपने स्वरूप की स्मृति आ जाती है कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। मेरा स्वधर्म ही शान्त है। यह समय ही समस्याओं का है इसलिए समस्या तो आयेगी जरुर, लेकिन आप ओम् शान्ति के अर्थ स्वरूप में टिक जाओ कि मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति के सागर परमात्मा की बच्ची/बच्चा हूँ। तो इस स्मृति से आपकी समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। कारण, निवारण में बदल जायेगा क्योंकि स्वरूप की स्मृति आ गयी। दिल की बीमारी वालों के लिए खुशी की दवा पहली खुराक है। तो समस्या समाधान में बदल जायेगी तो खुशी होगी ना, तो ओम् शान्ति को यंत्र बना दो।

कलियुग की अन्त होने कारण बातें तो आयेगी, बात आती है, चली जाती है। बात आके चली जाने के बाद भी अगर हम उसी के बारे में सोचते रहेंगे, वर्णन करेंगे तो हमारी खुशी भी चली जाती है। कोई हमारे घर में आके एक छोटा-सा रूमाल भी लेके जावे तो आप उसको छोड़ेंगे? तो हमारी खुशी, हमारा शुभ चिंतन शान्ति का, उसमें व्यर्थ चिंतन चल जायेगा। और व्यर्थ (वेस्ट) बहुत फास्ट चलने के कारण मन की शक्ति को खो देते हैं इसलिए आप खुशी कभी नहीं गँवाओ। खुश रहना यह आपके लिए बड़े-ते-बड़ी दवाई है। इसके लिए जो बीता सो बीता उसके चिंतन में नहीं जाओ। जो हुआ सो हुआ, फिनिश। बीती को चितवो नहीं। पानी को बिलौने से क्या मिलेगा? बाँहों का दर्द इसलिए बीती को छोड़ भविष्य का सोचो। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ तो खुशी आयेगी तो आपकी यह बीमारी ठीक होती जायेगी। तो जब भी कोई दर्द आपको हो तो उस समय ''मैं आत्मा हूँ'' यह गोली ले लो क्योंकि आत्मा परमात्मा की सन्तान होने कारण शान्ति का सागर, सुख का सागर याद आने से खुद भी ऐसे स्वरूप में स्थित हो जायेंगे। तो यहाँ यह खुशी की खुराक खूब खाओ इसे खाने की विधि है मैं आत्मा परमात्मा की सन्तान हूँ। जैसे बाप वैसे मुझे बनना है। तो खुशी कभी नहीं छोड़ना क्योंकि खुशी की खुराक छोड़ दी तो क्या होगा? बातें व्यर्थ आती हैं, हालातें आती हैं उसमें ही लगे रहते हैं लेकिन अभी हमको शिवबाबा कहते हैं इन बातों को छोड़ो खुशी की खुराक है लो। सदा खुश रहो और खुशी बाँटो क्योंकि यह खुशी ऐसी चीज है जो जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगी। तो अभी चलते-फिरते भी अपने को आत्मा समझते हर्षित होते रहेंगे। तो हमारा आप सबके प्रति यही शुभ संकल्प है कि आप यहाँ से ठीक होके ही जायेंगे। होना ही है, होंगे नहीं होंगे, यह कभी नहीं सोचो। होना ही है तो हो ही जायेंगे।

हमारी जीवन अभी दु:ख से खत्म होके सदा सुख में, शान्ति में, खुशी में बदल गयी। कोई चिंता नहीं है क्योंकि जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान। तूफान, तोहफा में बदल गया। मैं मेरा बाबा को दे दिया माना सब दु:ख दूर। मेरापन आया माना गृहस्थी। तेरा माना शिवबाबा, ट्रस्टीपन। तो यह चेक करो क्योंकि वायुमण्डल संसार का होता है, इसमें मेरा खत्म होके तेरा हो जाये। मेरा आया तो दु:ख, अशान्ति, खिटखिट और तेरा तो कुछ नहीं। बस, सब दु:ख दूर। ऐसे भी नहीं कि कहे तेरा और मेरा भी करता रहे, यह नहीं। अपने आपको अच्छी तरह से देखो कि सारा दिन क्या याद रहता है? तेरा तेरा या मेरा मेरा? मेरा आवे नहीं तब तो कहेंगे मरजीवा जन्म। बाबा की गोदी में आ गये माना हमारा जीवन अतीन्द्रिय सुख में बदल गया। अगर भगवान के बच्चे बनकर भी खुश न

रहे तो और कौन रहेगा? इसलिए खुश रहो। जरूर कोई दुनियावी चिंता वा चिंतन मन में है तब खुशी चली जाती है, नहीं तो खुशी ऐसे ही नहीं जाती है। मैं भगवान का बच्चा हूँ, इस स्मृति को सदैव इमर्ज रखो तो हर समय खुश रहेंगे।

बाबा हमारे साथ कम्बाईन्ड है, तो बाबा से शक्ति लो और उड़ो, इसमें चाहिए हिम्मत हमारी मदद बाबा की। हर समय उमंग-उत्साह में रहें। मेरा बाबा कहा तो सब कमजोरी खत्म हो जाना चाहिए। जो संकल्प किया वो करना ही है। करेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, कर तो रहा हूँ, समझ तो रहा हूँ... ऐसा नहीं, करना ही है यह है दृढ़ता। गे गे नहीं। करना ही है यह दृढ़ता की चाबी हमारे पास है तो फिर हम पास हुए ही पड़े है। कोई बड़ी बात नहीं है। जो करना है अब करना है क्योंकि ऐसी शुभ घड़ी में ऐसा शुभ कार्य अब नहीं तो कब नहीं। अभी ऐसा पुरुषार्थ करके जायें जो बाबा कहे यह तो नम्बरवन हो गये। यहाँ हरेक अपना रिकॉर्ड जितना अच्छा करना चाहे उतना अच्छा कर सकता है। यह 7-8 दिन नहीं, यह जीवन के परिवर्तन के दिन है। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“तन, मन, धन और जन यह चारों ही स्वस्थ हों, चारों का साथ हो, किसी की भी अधीनता ना हो” (13-09-06)

शिव पिता का ध्यान करना, यही ज्ञान है। ज्ञान कहता है, अपने ऊपर पूरा ध्यान रखो। बाबा का ध्यान तब रहेगा जब अपने पर ध्यान रहेगा। हमारी याद कहाँ तक है, हरेक अपने आपको टेस्ट कर रहा है। सबकी टेस्ट चल रही है। बुद्धि एक मिनट तो क्या, एक सेकेण्ड में शान्त हो जाए। बाबा ने देखा बच्चे अभी तक मिनट-मिनट का ध्यान नहीं रखते हैं। समय थोड़ा है, जाना उस पार है लेकिन अभी तक किनारा ही नहीं छोड़ा है तो पार कैसे पहुंचेंगे? नईया को हमेशा पानी में रखते, गैरेज में नहीं रखते हैं, वह पानी में हिलती रहती है। हमारी नैया भी सागर के बीच है, माया की लहरें जबरदस्त हैं। वह किसी का साथ भी लेने नहीं देती है। बाबा यह सब अनुभव कराता है, जिन्होंने किनारा छोड़ा ही नहीं है, तो भले समझते रहें कि हम जा रहे हैं लेकिन वहीं के वहीं खड़े हैं। कर्मबन्धन की जो बड़ी रस्सियाँ हैं, यहाँ आते हैं मुरली सुनते हैं तो अच्छा लगता है, पर आगे बढ़ने का कोई लक्ष्य ही नहीं है। याद ही नहीं है कि घर जाना है। इतना पार करके आये हैं, बाकी अभी थोड़ा रहा है। शरीर पुराना है। तन, मन, धन, जन चारों ही स्वस्थ हों। स्थिति ऐसी हो चारों का साथ हो, अधीनता न हो। जब नैया पर बैठे हैं तो और कोई सहारा ले नहीं सकते हैं। हिलने वाले का साथ कभी नहीं लेना चाहिए।

इतनी अच्छी दवाई है, टाइम पर ले लो। याद में रहने के लिए हर टाइम की विधि अपनी है। सवेरे उठते ही निर्वाणधाम का उठाने वाला शान्ति में खींचता है। खींचने वाला शान्ति का सागर है। वह शान्ति का सागर है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर जब यहाँ आता है, हमको अपना बनाता है तब हमें पता चलता है। सागर नाम क्यों पड़ा है? गहराई में लेकर जाता है। सागर के किनारे भी आये तो वन्डरफुल ठण्डक होती है। बाबा के नजदीक आओ तो शीतल बनने का अनुभव हो जाता है। शीतलता का सागर नाम नहीं है, पर शीतलता का अनुभव होता है, ज्ञान, प्रेम और शान्ति में। सागर को देखते-देखते कितना अच्छा है, कितना मीठा है, लोगों के लिए खारा है। नदी में नहाना आसान है, पर सागर में!। सागर को समझना, उसकी गहराई में जाना, बिल्कुल प्योरीफाय हो जाना, तभी कहते हैं पतित-पावन हैं। सागर की गहराई में वो जायेंगे जो समझेंगे पतित हूँ, मुझे पावन बनना है। देवतायें सम्पूर्ण निर्विकारी पूज्य थे, महात्मायें वैसे नहीं हैं।

एक पूज्य, दूसरा पुजारी। अगर कोई न पूज्य है, न पुजारी है माना एकदम विकारी है। वह कभी मन्दिर मस्जिद में भी नहीं

जायेगा। बस खाया पिया, पैसा कमाया, गंवाया। परन्तु बाबा हमको पुजारी से पूज्य बना रहा है। हम जल्दी मानने लग पड़ते हैं, यह हमारा धर्म प्राय:लोप हो गया था, तभी तो कहता है फिर से एक धर्म की स्थापना करता हूँ। कल्प पहले वाले बाबा के बच्चे को स्मृति जल्दी आती है। बाबा के सामने आया तो स्मृति आई, ज्ञान सुना तो ब्राह्मण बन गया। ब्रह्मा मुख द्वारा हम ब्राह्मण एडाप्ट हुए हैं। इतनी खुशी है हमें! कुल का बहुत नशा होता है। भले कोई कितना पैसे, पोजीशन वाला हो, परन्तु हम ऊंच कुल के हैं। अभी हम 21 पीढ़ी के लिए राजाई ले रहे हैं।

ऊंच कुल वालों के संस्कारों में सच्चाई, स्नेह ऐसा होता जो बात मत पूछो। अगर सच्चाई, स्नेह नहीं है तो क्षत्रिय घराने के हैं। मन से, मुख से और आँखों से लड़ते हैं। हम क्या जानें यह सब ऊंच कुल वाले। बाबा कहते हैं नशे में रहो ऊंच कुल की हूँ। ब्रह्माकुमारी हूँ, कम बात है क्या! शक्ल देख के लोग कहें ब्रह्माकुमार ऐसा होता है! चलन से चेहरे से दिखाई दे कि यह अन्दर बाहर एक है। जिसकी याद अन्दर होती है, उसकी याद चेहरे से दिखाई देती है। किसी ने और कोई बात कहा, लग गयी अन्दर, तो बाबा की बात मिट गयी और वो बात लग गयी। पुरानी बात भूली नहीं है तो वो कौन है? ऊंच कुल वाली नहीं है। ब्राह्मण कुल में चमकता वही है जिसमें सच्चाई और पवित्रता के सिवाय कुछ नज़र न आये। इसमें मेहनत नहीं है, बहुत सहज है, परन्तु फालतू बातें मन में रखते हैं तो याद करना मुश्किल लगता है। है फालतू, उसको राइट समझकर सिद्ध करना चाहते हैं। मुख से नहीं कह सकते हैं लेकिन मन में युद्ध सदा चलती रहती है। जब से आत्मा परमात्मा से बिछड़ी है, बिचारे मन का क्या हाल हो गया है। तो अभी मन शीतल हो जाये। दवाई है याद, दुआ है सेवा। दोनों का इकट्ठा मेल हो जाता है। सेवा में याद है, याद में सेवा कैसे हो रही है। याद अन्दर में सेवा निष्कामी है बिल्कुल, सच्ची भावना है। निमित्त भाव है, निर्मल स्वभाव है वो सेवा करता है। निर्मल वाणी में सेवा समाई हुई है। किसी को पीछे हटाना, किसी को आगे बढ़ाना, यह ऊंच पद पाने वाले की निशानी नहीं है।

बाबा हमेशा पत्र में लिखता था, ब्राह्मण कुल भूषण, नूरे रत्न बच्ची को याद प्यार स्वीकार हो। बाबा हमारे नूर में बैठा है। इतना बाप का प्यार फिर बच्चे का भी प्यार बाप से हो, तो वो यात्रा कैसी और कितनी अच्छी होगी। अभी सुखधाम के संस्कार बन गये, दु:खधाम के संस्कारों से मैं क्या जानूं, वो छूट गये, अंश भी नहीं रहा। वो न हमारा धर्म है, न हमारा कर्म है। सब छूट गये। जा रहे हैं, तैयारी नहीं कर रहे हैं, पहुंच रहे हैं, घर पास में है। यह बाबा हम बच्चों से उम्मीदें रखकर कहाँ से खींचकर अपना बना लिया है। बाबा कहता है साथी मैं हूँ, तुम साक्षी होकर प्ले करो बस, मैं बैठा हूँ। ऐसे अपने को सिकीलधे लाडले बच्चे समझने के कारण, हम ही थे, हैं और होंगे। सोचने की बात ही नहीं है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"अपनी ऊंच स्थिति बनाकर शीतल काया वाले योगी बनो" (1999)

1) हम सच्चे बाबा के बच्चे हैं, सच के अन्दर कभी आंच नहीं लाओ तो स्थिति ऊंची बन जायेगी। आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों-क्यों में अपना माथा गर्म नहीं करो, दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता। शीतल काया वाले योगी बन जाते।

2) मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी। यूनिटी भी गंवायेंगे। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गढ्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न

हो। ऐसे नहीं सोचो – देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाली दुर्वासा नहीं। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता – देखना इसकी क्या गति होगी। मैं क्यों बुरा सोचूं। अगर मैने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता उसे क्यों मिला।

3) हमें बाबा ने श्रीमत दी है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती। अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

4) पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है। मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण जरूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो।

5) ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

6) भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेन्ट.... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती – यह मेरा स्टूडेन्ट तुम्हारे सेन्टर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ।

7) अगर मैं परचिन्तन करूंगी तो दूसरा सुनेगा। बाबा ने कहा बच्चे, इस असार संसार का समाचार न सुनो, न देखो और न वर्णन करो। यह बड़ी सुन्दर है, यह अच्छी लगती। यह चीज अच्छी है, ऐसे सोचा तो खत्म। बाबा की गोदी छोड़कर उतरते क्यों हो! गोदी में सदैव बैठे रहो, उनकी छत्रछाया के नीचे रहो तो कोई की ताकत नहीं जो मेरे पास आये। माया आती है इसका कारण तुम उसे देखते हो। बाबा की गोदी छोड़ते हो। भय का भूत बैठा हुआ है। निर्भय बनो तो माया आ नहीं सकती।

8) निर्भय माना कोई भी विकार की शक्ति नहीं जो मुझे डरा सके। माया हरा नहीं सकती। मैं तो महावीर-महावीरनी हूँ। दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं जो मुझे भयभीत करे या मुझे अपनी अंगुरी दिखाये। आप चैलेन्ज करो कि कोई ऐसी ताकत नहीं जो मुझे हरा सके। यह कहने की बात नहीं लेकिन अन्दर में दृढ़ता हो, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान् बनकर रहो।

9) अन्दर में थोड़ा भी आलस्य आया तो पूरा ही खा जायेगा। आज थोड़ा आलस्य आयेगा, कहेंगे चलो क्लास में लेट जाते, क्या फ़र्क पड़ेगा! धीरे-धीरे माया पूरा ही खा लेती। सर्विस की फील्ड में भी आलस्य के वस अनेक बहाने बनाते। दिल सच्ची नहीं तो अनेक कारण निकलते। दिल सच्ची हो तो कोई भी कारण नहीं।

10) बाबा ने कहा बच्चे अपने संकल्पों को स्टॉप करने की प्रैक्टिस करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो, इसके लिए नियम बनाओ। ड्रिल करो, अटेन्शन रखकर प्रैक्टिस करो तो बुद्धि शीतल और शक्तिशाली बन जायेगी। खुशी में रहेंगे। अच्छा।